IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, August 2023

झॉसी जिले के बुनकरों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति, बुनकरों का औद्योगिक महत्व

शील कुमार[1] एवं डॉ. आदित्य कृष्ण सिंह चौहान[2]
शोधार्थी, एम.ए. (अर्थशास्त्र), एम. फिल.[1]
शोध निर्देशन एवं एसोसियेट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग[2]
जे. एस. विश्वविद्यालय शिकोहाबाद, फिरोजाबाद

सारांश– वर्तमान समय में लघु कपडा उद्योग अपने दौर के उस समय से गुजर रहा है जहां इसे सरकारी एवं उद्योग जगत के महारथियों की सहायता एवं मार्गदर्शन की आवश्यकता है। झांसी जिले के लघु उद्योगों में से एक कपडा उद्योग है जिसमें अधिकांश बुनकर जाति के लोग अपनी जीविका के लिए संलग्न है। झॉसी जिले के पॉच तहसीलों – मऊ–रानीपुर,कटेरा एवं टहरोली में कार्यरत बुनकरो की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया गया है जिसमे मऊरानीपुर में 11250,रानीपुर 11420,कटेरा 5240 एवं टहरौली में 3980 पंजीकृत बुनकर कारीगर है जो लघु कपडा उद्योग से सीधे जुडे हुए जिनकी दैनिक आमदनी औसत 200 रु.है।

प्रमुख शब्द– बुनकर,आर्थिक,सामाजिक।

शोध अध्ययन का उद्देश्य – मेरे द्वारा किये गये शोध के उद्देश्य है–
1. झॉसी क्षेत्र के बुनकर जाति के कारीगरों की सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना।
2..झॉसी क्षेत्र के बनुकर जाति के कारीगरों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
3..झॉसी क्षेत्र के बनुकर जाति के लोगों के कपडा उद्योग से जुडे लोगों की संख्या का अध्ययन करना।

शोध क्षेत्र का परिसीमन

मेरे शोध का क्षेत्र झॉसी जिले की मऊ,रानीपुर,कोटरा एवं टहरौली क्षेत्र में निवास कर रहे बुनकर जाति के कामगारो का है।

प्रस्तावना– औद्योगिक विकास में वुनकरों की भूमिका

भारत जैसे विकासशील देश की आर्थिक प्रगति वुनकरो का औद्योगिक क्षेत्र से जोडना अनिवार्य है। बुनकरो के उघोग विकास से आय उत्पादन तथा रोजगार की मात्रा वढाकर भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास दर मे वृद्धि की जा सकती है। साथ मे क्षेत्रीय वुनकरो की विकास दर में वृद्धि हो सकेगी वर्तमान में झाँसी जिले के वुनकरो द्वारा चादर वेडसीट सूती की तौलीया टेरीकाट की तौलीया रजाइयाँ गददे का निर्माण कलात्मक ढगं से तैयार किया जा रहें है। लेकिन यहाँ के वुनकरो वे लिए उचित मूल्य बाजार न होने के कारण उत्पादित वस्तुओं का उचित मूल्य नही मिल पाता है। जिसका प्रभाव यहाँ के वुनकरों पर पडता हैं। जिससे इनकी औधिक स्थिति कमजोर हो गई है। वुनकरो के विकास के लिए सस्ती विजली होना अति आवश्यक है इस लक्ष्य के लिए पंचवर्षीय योजनाओं के अधीन विजली का उत्पादन वढाने के लिए बहुमुखी योजनाओ की स्थापना की जानी चाहिए।

बुनकर क्षेत्र का आधुनिकी करण

झाँसी जिले के वुनकर परम्परागत ढंग से वस्त्रों का उत्पादन कर रहे हैं। वर्तमान मे वुनकरो को नई तकनीकि का विकास किया जाना जरूरी है। नई तकनीकि से उत्पादन क्षमता का विकास होगा निमति को वुनकरो को निमति प्रोत्साहित करने मे मदद मिलेगी कलात्मक वस्त्रो का उत्पादन सम्भव होगा आधुनिकीकरण न होने के कारण स्थानीय वुनकर परम्परागत साधनों का प्रयोग करते है जिससे अच्छे किस्म के वस्त्रो का उत्पादन नही हो पाता है इस लिए बडे उद्योग इनके माल की माँग नही करते है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, August 2023

बुनकरों की कार्य दशायें – सवाल रोजगार का

सवाल हथकरघे का नही है बल्कि रोजगार का है कपड़े की बुनाई सैकड़ों तरीक से की जा सकती है हथकरघा तो उन्ही में से एक है परन्तु हम रोजगार का ताना बाना कैसें बुने पहले दिन से ही हम इसी फिराक में है। मई 1955 में राश्ट्रीय विकास परिषद (एन.डी.सी.) की दूसरी बैठक की अध्यक्षता करते हुये प्रधानमंत्री नेहरु ने पूंछा था वह समय कब आयेगा जब हम रोजगार की समस्या हल कर सकेगें ? प्रो0पी0सी0 महालनो जिस ने कहा था यदि हाथ से चलने वाले उद्योगों को बढ़ाया जा सके तो पांच वर्ष में ही रोजगार का काम हमें सताना बंद कर देगा उन्होने आगे कहा था कितने रोजगार पैदा किये जा सकते हैं यह उनमें होने वाले निवेष के आकार पर निर्भर करेगा भारी उद्यागों में रोजगार के अवसर कम होते हैं जबकि लघु और कुटीर उद्योगों में अधिक ''(कुटीर अथवा ग्रामीण उद्योग में हथकरघा सबसे बड़ा एकल मद है) एन0डी0सी0 की उसी बैठक में तत्कालीन वित्त मंत्री डॉ0 सी0डी0 देशमुख ने भी कहा था कि रोजगार के जरिये से यह आवश्यक है कि निवेश के आकार प्रकार की परीक्षा की जाये इसी दृष्टिकोण से उपभोक्ता वस्तुओं की आपूर्ति लघु और कुटीर उद्योगों के माध्यम से होनी चाहिए पं0 जवाहर लाल नेहरु की अंगुवाई में एन0डी0सी0 में उपस्थित सभी सदस्य इस बात पर सहमत थे कि ग्रामीण उद्योगों की रोजगार सृजन क्षमता को देखते हुये उनकों प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

1. **कौन बनाने वाले मजदूर**–लच्छी से कौन बनाने वाले मजदूर सदैव ठेके पर कार्य करते है ठेकेदार पर कार्य करने वाले मजदूर अधिक से अधिक कार्य करने की कोशिश करते है। तैयार कोनो से ताना बना बनाया जाता हैं इससे ताना बनाने में आसानी होती है । ऐसे श्रमिक1 दिन में 50 से 70 रु0 तक का काम कर लेते है। यह धनराशि एक परिवार के लिये बहुत कम होती है इसलिये इन मजदूरों की स्थिति अच्छी नहीं है।
2. **ताना बुनने वाले श्रमिक** – ताना बनाने वाली मशीन का आकार बुहत बड़ा होता है इस मशीन को लगाने के लिये 40 से 70 फिट लम्बी लगभग 30 फिट चौड़ी जमीन की आवश्यकता पड़ती है इस मशीन को चलाने वाला मजदूर एक दिन में एक ताना बना लेता है तथा 1 दिन में उसें 120रु0 से लेकर 160रु0 की प्राप्ति होती हैं लेकिन यह कार्य अल्पकालीन है।
3. **बाबीन बनाने वाले मजदूर** – ताना बन जाने के बाद बाना बनाने के लिये बाबीन बनाने की आवश्यकता पड़ती है बाबीन बनाने वाली औरते होती हैं जो बाने के लिये बाबीन बनाती है। इनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नही है क्योंकि इन्हे बुहत मामली मजदूरी दी जाती है। इन्हे एक दिन में 20 रुपये से 25 रुपये तक की प्राप्ति होती है।

रंगाई करने वाले श्रमिक

रंगाई करने का कार्य रंगराज द्वारा किया जाता है इनकी सहायता के लिये कुछ और श्रमिकों को रखा जाता है इनकों सहायक रंगराज कहते हैं मुख्य रंगराज रगाई की कला में विशेषज्ञ होता है इनकी नियुक्ति स्थायी तौर पर की जाती है तथा इनकों एक निश्चित वेतन दिया जाता है ये सूत को पानी मे घुमाते हैं भट्टी में कोयला झोकते हैं रंग देना रंगाई करना तथा फैलाकर सुखाना आदि कार्य करते हैं।

इन सभी कार्यो को करने के लिये सहायक रंगराजों को समय समय पर खौलते पानी में हाथ डालना पड़ता है तथा आग में कोयला देते समय जख्मी हो जाते हैं अधिकांश रंगाई कक्ष खुले मैदान में होते हैं जिससे इन्हे सर्दी गर्मी बरसात को भी सहन करना पड़ता है हथकरता उद्योग की प्रक्रिया में रंगाई का कार्य अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

कार्य दिवस–हथकरघा उद्योग में लगे बुनकरों को मालिक के पास कच्चा माल न होने के कारण वर्ष में कई दिनों तक कार्य नही मिलता है इस कारण उनकी आर्थिक स्थिति बहुत अधिक दयनीय है बुनकर श्रमिकों को कार्य तब तक ही मिल पता है जब देश व विदेश के व्यापारी निर्माण के लिये आदेश व नमूने भेजते हैं । हथकरघा उद्योग में लगे अन्य प्रकार के श्रमिकों द्वारा कार्य प्रायः ठेके पर किया जाता है जाड़े के समय में बुनकर 8 बजे सुबह तक गर्मी में 6 बजे सुबह ही करघे पर बुनाई करने आ जाते हैं।

बुनकर की स्थिति –हथकरघा उद्योग में लगे अधिकांश श्रमिक ठेके पर कार्य करते हैं इनकी मजदूरी इतनी कम होती है कि यह अपने परिवार का भी भरण पोषण बड़ी मुश्किल से कर पाते हैं धन की आवश्यकता होने के कारण इन्हे मजबूरन कम मजदूरी पर कार्य करने के लिये विवश होना पड़ता है बुनकर वस्तु को बुनकर समिति के सभापति व्यापारी या ठेकेदार का देता है तथा निश्चित मजदूरी प्राप्त करता है आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण यह अपना इलाज भी ठीक से नही करा पाते है हथकरघा उद्योग का अन्तर्राष्ट्रीय रुप होते हुये भी इस उद्योग में संलग्न श्रमिक की आवास व्यवस्था एवं रहन सहन कर स्तर निम्न हैं ।

छपाई – छपाई का कार्य अधिकतर टीन शेड की कार्यशाला के अन्दर किया जाता है छपाई का कार्य अधिकांशता ठेके पर करवाया जाता है कुछ व्यापारी छपाई का कार्य मासिक वेतन पर व्यक्तिगत रखकर करवाते हैं छपाई का कार्य करवाने से पहले डिजाइनर डिजाइन केन्द्र द्वारा मान्य डिजाइनों को बनवाकर उन्हे सांचे में करवाकर छपाई का कार्य सम्पन्न करते हैं झाँसी

ISSN 2581-9429 IJARSCT

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, August 2023

मण्डल में अभी भी समितियों के पास छपाई घरों की कमी है यह लोग ठेके पर दूसरी जगह जो समिति से दूर होता हैं। छपाई का कार्य करवाते हैं और बाद में छपी हुयी वस्तु अपने पास मंगा लेते हैं।

झाँसी जिले में बुनकरश्रमिक एवं करघों तथा पावरलूमों की संख्या वर्ष 2000–01

क्षेत्र	बुनकर श्रमिकों की संख्या	पावरलूमों की संख्या	करघों की संख्या
मऊरानीपुर	11,250	4,270	3,660
रानीपुर	11,410	4,450	3,740
कटेरा	5,240	3,100	2,670
टहरौली	3,980	1,560	1,650
कुल	31,880	13,880	11,720

सोत्र – कार्यालय हथकरघा एवं वस्त्रउद्योग झाँसी

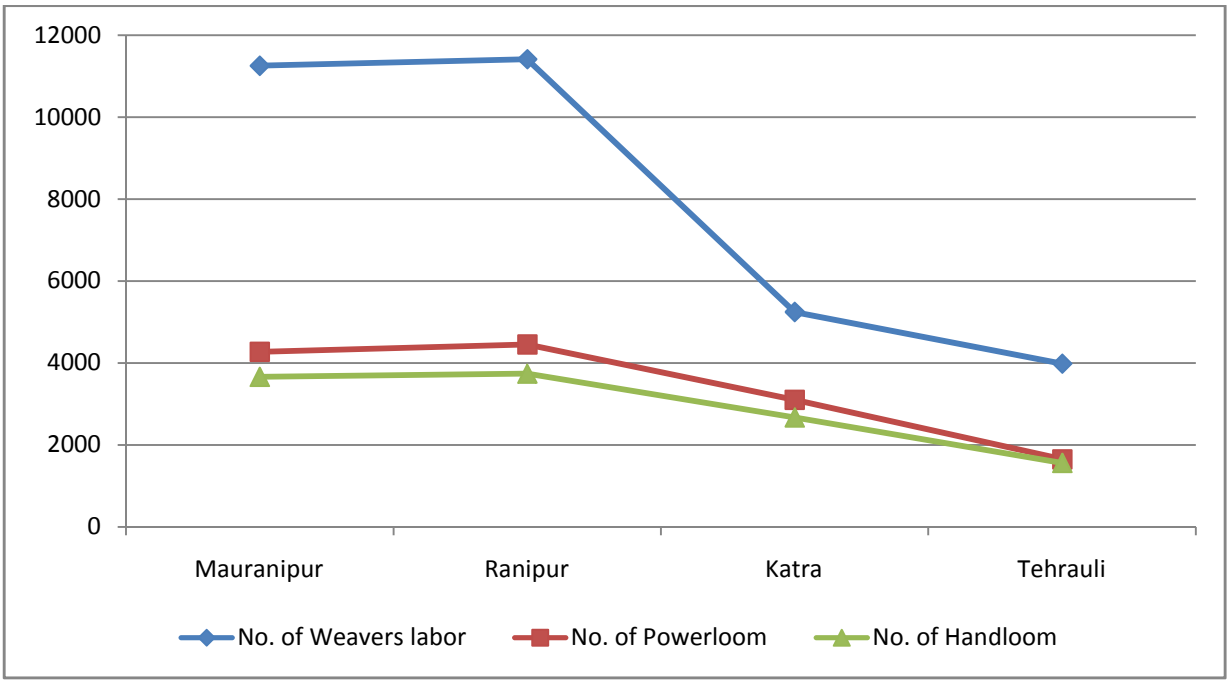

झाँसी जिले में हथकरघा बुनकर श्रमिकों की संख्या

हथकरघा सर्वेक्षण उ0प्र0 वर्ष 2006 – 07 के अनुसार झाँसी जिले में बुनकर परिवारों की संख्या 32970 है यह लोग 10460 करघों पर कार्य करते हैं। 13340 पावरलूम पर कार्य करते थे।

झाँसी जिले में हथकरघा बुनकर व पावरलूम व करघों की संख्या

क्षेत्र	बुनकर श्रमिकों की संख्या	पावरलूमों की संख्या	करघों की संख्या
मऊरानीपुर	11,450	4,102	3,260
रानीपुर	11,930	4,460	3,690
कटेरा	5,570	3,220	2,550
टहरौली	4,020	1,558	960
कुल	32,970	13,340	10,460

सोत्र – कार्यालय हथकरघा एवं वस्त्रउद्योग झाँसी

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, August 2023

झाँसी जिले में हथकरघा बुनकर व पावरलूमों की संख्या वर्ष 2006–07

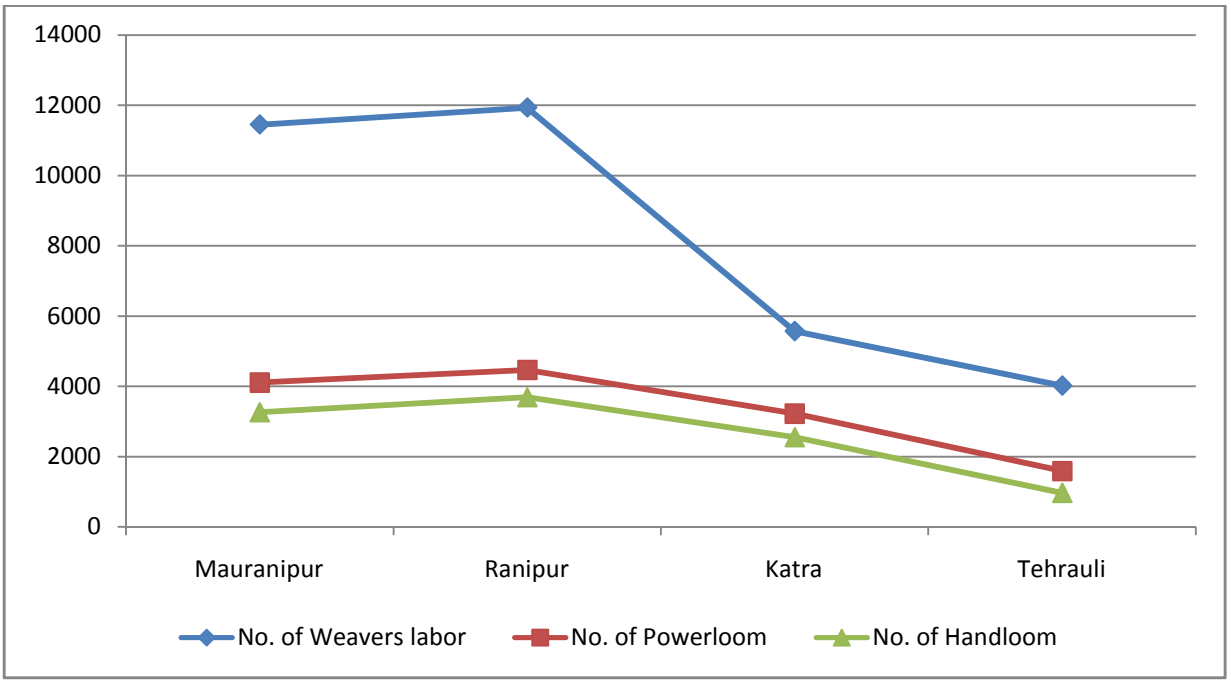

निष्कर्ष

इस शोध कार्य के माध्यम से पाया गया कि जिला झाँसी के मऊ,रानीपुर,कोटरा और टहरौली क्षेत्र के बनुकर कामगारों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति संतोषजनक नही है। उन्हे विकास की मुख्य धारा में लाने के लिए सरकार द्वारा आर्थिक पैकेज की आवश्यकता होगी एवं उन्हे एक राष्ट्रीय पहचान दिलाने के लिए राष्ट्रीय बाजार की आवश्यकता होगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. अमर उजाला
2. कुरुक्षेत्र पत्रिका
3. योजना पत्रिका
4. खादी एंव ग्रामोउद्योग विभाग झाँसी